निर्णय की एक भूल

Gillette Audio — नंदो द स्क्राइब — gillettenarrative.com

जब कोई आदमी इकसठ का हो जाता है और ख़ुद को सचमुच अकेला पाता है, तो वह अपनी यादों के बीच नहीं रहता। वह अपनी ग़लतियों के बीच रहता है।

यादें बेज़रर होती हैं। वे अब आपको चोट नहीं पहुँचा सकतीं। ग़लतियाँ अलग होती हैं। ग़लतियाँ आपसे पहले जाग जाती हैं। वे बिस्तर के किनारे बैठकर आपकी आँखें खुलने का इंतज़ार करती हैं। वे उम्र की वफ़ादार साथी हैं, क्योंकि वे अकेली चीज़ हैं जिन पर दोबारा सौदा नहीं हो सकता।

उस अगस्त की सुबह मैंने ख़ुद को दक्षिणी इटली की उस पुरानी संस्था के बारे में सोचते पाया जिसे मजबूरी की शादी कहा जाता है।

चालीस और पचास के दशकों के गाँवों में, दो नौजवान उस लापरवाही के साथ प्यार में पड़ जाते जो सिर्फ़ जवानी के हिस्से आती है। वे एक-दूसरे को चाहते, एक-दूसरे पर भरोसा करते, और नतीजों के बारे में कभी नहीं सोचते। फिर नतीजे वैसे भी आ जाते। कभी एक बच्चा। कभी दो। कभी तीन।

परिवार हक़ीक़त को देखते और एक व्यावहारिक हल चुन लेते।

इसलिए नहीं कि वे प्रबुद्ध थे।

इसलिए नहीं कि वे रूमानी थे।

बल्कि इसलिए कि बदनामी शादी से ज़्यादा महँगी पड़ती थी।

दोनों प्रेमियों को वेदी की ओर धकेल दिया जाता, ज़िम्मेदारी में दीक्षित कर दिया जाता, और समाज में छोड़ दिया जाता — बच्चों, दायित्वों और एक ऐसे भविष्य के साथ जिसकी उन्होंने योजना नहीं बनाई थी, पर अब जिसे बनाना ही था।

जब परिवार रिश्ते के ख़िलाफ़ होते, तो एक और हल था।

फुइतीना।

भाग जाना।

दो नौजवान साथ ग़ायब हो जाते, यह ऐलान करने के लिए कि सहमति अब बेमानी हो चुकी है।

संदेश सीधा था:

हम एक-दूसरे के हैं। जब हो सके, पीछे आ जाइए।

आख़िरकार सब लौट आते। परिवार हमेशा लौटते हैं। माता-पिता माफ़ कर देते हैं क्योंकि वे अपने बच्चों से प्यार करते हैं। दादा-दादी माफ़ कर देते हैं क्योंकि पोते-पोतियाँ दिल के हर पुराने क़ानून को उलट देते हैं।

पर उस सुबह मैं नौजवान जोड़ों के बारे में नहीं सोच रहा था।

मैं अपने बारे में सोच रहा था।

बरसों से मेरा निजी अभ्यास ग़लतियों का हिसाब रखना बन चुका था।

ग़लत फ़ैसले।

ग़लत चुप्पी।

ग़लत वफ़ादारी।

ग़लत उम्मीदें।

और उन नौजवान प्रेमियों के उलट, मेरे लिए कोई मरम्मती शादी इंतज़ार नहीं कर रही थी। कोई गाँव का पादरी नहीं। कोई पारिवारिक पंचायत नहीं। कोई सामाजिक सूत्र नहीं जो इस गणित को सुधार सके।

तब मुझे एहसास हुआ कि मेरी अपनी फुइतीना चालीस साल चली।

पैंसठ देश।

चार दशक।

महाद्वीपों के आर-पार एक अकेला पलायन।

सवाल अब यह नहीं था कि मैं भागा था या नहीं।

सवाल यह था:

मैं आख़िर किससे भागा था?

14 अगस्त 2026 को जवाब आख़िरकार आ गया।

यह जानना काफ़ी नहीं था कि क्या हुआ।

यह समझना ज़रूरी हो गया कि ऐसा क्यों हुआ।

प्रज्ञा और पीड़ा के बीच का फ़र्क़ अक्सर एक ग़ायब व्याख्या से ज़्यादा कुछ नहीं होता।

और अचानक सब साफ़ हो गया।

वह विश्वासघात नहीं था।

वह षड्यंत्र नहीं था।

वह नियति भी नहीं थी।

वह निर्णय की एक भूल थी।

निर्णय की एक भव्य, महँगी, आजीवन भूल।

मैं इसे सुधार नहीं सकता था।

मैं इसके ख़िलाफ़ अपील नहीं कर सकता था।

मैं उस सर्वोच्च सत्ता से मोल-भाव नहीं कर सकता था जो इस नतीजे के लिए ज़िम्मेदार थी।

मेरी नियति।

हर उस परिणाम का मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिसका मैंने कभी सामना किया।

और पहली बार, मैंने उससे बहस करना बंद कर दिया।

© 2026 Ferdinando Frega — सर्वाधिकार सुरक्षित
Gillette Audio — संयुक्त राज्य अमेरिका में कॉपीराइट पंजीकरण प्रक्रियाधीन